ISSN : 2583-2948

संपादकीय

सितंबर माह आते ही सर्वत्र हिन्दी दिवस, हिन्दी पखवाड़ा पर्व जैसे सजने लगता है। वर्ष भर जो कहीं न कहीं सुप्तावस्था में पड़े होते हैं, इस अवसर पर दायित्व समझकर वे भी सक्रिय हो उठते हैं और हिन्दी माह का समारोह देश – विदेश के हर क्षेत्र में अपने – अपने ढंग से मनाते हैं। यह महीना ऐसा लगता है मानो हर दिन एक बड़ा महोत्सव है। राजभाषा अधिकारी, व्यक्तिगत संस्थान, सरकारी संस्थान हर जगह हिन्दी भाषा के ऊपर बोलने वालों का ताँता लगा रहता है। दक्षिण भारत को हिन्दी भाषा का सर्वाधिक विरोधी माना जाता है और कहीं न कहीं यह सच भी है क्योंकि यहाँ राजनीतिक दल के लोग हिन्दी के माध्यम से अपनी रोटियाँ सेंकते हैं और जो चर्चा में नहीं होते वे भी तनिक समय के लिए ही सही लाइम लाइट में आ ही जाते हैं। कहीं कहीं तो इसे काला दिवस के रूप में मनाया जाता है परंतु यहाँ के भोले मानस के मन में इस दिवस के प्रति विशेष सम्मान है। हिन्दी पखवाड़ा, भिन्न भिन्न विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन, अतिथि व्याख्यान, छात्रों में जागरूकता लाने का अभिनंदनीय कार्य जितना दक्षिण भारत के हिन्दी अध्यापक और प्राध्यापक करते हैं देश के अन्य प्रांत के लोग इनसे कहीं पिछड़े हुये हैं। हर किसी में एक गज़ब का उत्साह दिखता है। शायद ही कोई शैक्षिक संस्थान होगा जो इस माह में हिन्दी का विशेष आयोजन करने से छूटता होगा। इस अपरिमित, नि: स्वार्थ और आत्मीय लगाव के प्रति यहाँ के श्रद्धेय लोग वंदनीय हैं। बहुधा यह प्रश्न आजकल अपना स्थान लिए हुये है कि हिन्दी पढ़कर छात्रों का भविष्य क्या होगा? इस प्रश्न के दो जवाब, मेरे जेहन में कुछ यूं आते हैं कि – जब गुरुकुल परंपरा में छात्र परिवार को छोड़कर ज्ञानार्जन के लिए जाते थे तब समाज में अध्ययन को रोजगार के दृष्टि से नहीं मापा जाता था। वह ज्ञान उन्हें विषम स्थितियों में सही निर्णय लेने, समाज की विसंगतियों को विनष्ट करने तथा किसी प्रकार की अराजकता को समूल मिटाने के लिए उत्प्रेरित करता था। यह सत्य है कि – परिवर्तित परिवेश के अनुरूप सब कुछ बदलना अनिवार्य है परंतु अध्ययन को सिर्फ और सिर्फ रोजगार और सेटलमेंट के सतह जिस प्रकार जोड़ दिया गया है यह चिंता का विषय है। न केवल हिन्दी अपितु कोई भी भाषा और उस भाषा का साहित्य सक्षम है – किन्हीं भी स्थितियों को पलटने में। ये साक्ष्य हैं तत्कालीन समय को विश्लेषित करने में और जिसे अपने समय, समाज और इतिहास की समूची जानकारी होगी उसे किसी भी तरह के नौकरी की कमी न होगी क्योंकि वे भाषा और साहित्य के अध्ययन की मदद से सही आकलन करने व इतिहास की गलतियों को दुहराने से बचने तथा जो उपलब्ध है उसे नवीनता से प्रस्तुत करने के सभी गुणों में दक्ष होंगे। अत: हिन्दी का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए विशेषकर जो द्विभाषी हैं उनके लिए रोजगार के अनेक अवसर उपलब्ध हैं बशर्ते जो पढ़ाई वे कर रहे हैं उसे गहनतम ढंग से करना होगा और तब परिपक्वता के आधार पर वे अपने भविष्य के सफल निर्माता बन सकते हैं।

अनुकर्ष पत्रिका का यह अंक भी संगोष्ठी विशेष अंक है। इसमें संकलित सभी लेख कौशल, भाषा और रोजगार के प्रति सही दिशा प्रदर्शित करने वाले हैं। आशा है कि यह अंक भी पाठकों के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगा। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

अनुपमा तिवारी
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी